IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, April 2024

भारतीय संस्कृति एवं नारी में महादेवी का चिन्तन

नीला देवी[1] व डॉ0 देशपति सार्मे[2]

शोधार्थी हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय महाविद्यालय, पुष्पराज गढ़ ,(म0 प्र0)

शोध सारांश -

महादेवी वर्मा ने यदि सास–बहू के भारतीय परिवारगत रूप की चर्चा भी खुलकर अपने निबन्धों में की होती तो निबन्ध की सार्थकता, भारतीय नारी के जीवन के इस पक्ष पर भी प्रकाशमयी बन जाती कि सास–बहू के रूप में भारतीय नारी किन–किन यातनाओं को सहती है। इस पक्ष का स्पर्श न करना महादेवी वर्मा का नारी–संसार के प्रति 'स्वंय' का सहज स्निग्ध भाव है। इस संग्रह में महादेवी वर्मा का पुरूष –सत्तात्मक समाज के प्रति तीखा आक्रोश साकार हुआ है। नारी के विविध रूपों–विधवाओं, परित्यकताओं एवं श्रमिकाओं के दुःखद जीवन–चित्रों की ये कड़ियाँ प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के नारी–जीवन की श्रृंखला बाँधे हुए है–'श्रृंखला की कड़ियाँ' में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक की नारी समस्याओं पर चेतन तूलिका के चित्र उभरे है और धनी मध्यम तथा निर्धन वर्ग की नारियों की आकृतियाँ साकार हो गयी है'। लेखिका ने विशेषकर दो प्रकार की नारियों का उल्लेख किया है। एक वे जिन्हे उपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व का ज्ञान नही है और दूसरी वे जो आज के युग में पुरूष–समाज की गुणावगुण में केवल समता करने की अभिलाषा रखती है।

मुख्य शब्द – भारतीय, संस्कृति, नारी, महादेवी वर्मा, चिन्तन, मानव जाति आदि।